5 हम समुद्र तल से 17-18 हज़ार फीट ऊँचे खड़े थे। हमारी दक्खिन तरफ़ पूरब से पच्छिम की ओर हिमालय के हज़ारों श्वेत शिखर चले गए थे। भीटे की ओर दिखने वाले पहाड़ बिलकुल नंगे थे, न वहाँ बर्फ़ की सफ़ेदी थी, न किसी तरह की हरियाली। उत्तर की तरफ़ बहुत कम बर्फ़ वाली चोटियाँ दिखाई पड़ती थीं। सर्वोच्च स्थान पर 'डाँड़े के देवता' का स्थान था, जो पत्थरों के ढेर, जानवरों के सींगों और रंग-बिरंगे कपड़े की झंडियों से सजाया गया था।

Scanned with CamScanner

प्रश्न

I. लेखक द्वारा वर्णित पर्वत प्रदेश की स्थिति का चित्रण अपने शब्दों में कीजिए। (2)

II. देवता के नाम और स्थान के विषय में बताइए। (2)

III. डाँड़े की कितनी ऊँचाई थी, जहाँ लेखक खड़ा था? (1)

उत्तर

I. लेखक के दक्षिण की तरफ़ पूरब से पश्चिम की ओर हिमालय के हज़ारों श्वेत शिखर थे। भीटे की ओर दिखने वाले पहाड़ बिलकुल नंगे थे, न वहाँ बर्फ़ थी और न ही हरियाली। उत्तर की ओर कम बर्फ़ वाली चोटियाँ दिखाई दे रही थीं।

II. वहाँ का देवता 'डाँड़े का देवता' कहलाता था और उसका स्थान पत्थरों के ढेर, जानवरों के सींगों और रंग-बिरंगे कपड़ों की झंडियों से सजा था।

III. डाँड़े की ऊँचाई समुद्र तल से 17-18 हज़ार फीट थी, जहाँ लेखक खड़ा था।

6 आगे एक घर में पूछने से पता लगा कि लङ्कोर का रास्ता दाहिने वाला था। फिर लौटकर उसी को पकड़ा। चार-पाँच बजे के करीब मैं गाँव से मील-भर पर था, तो सुमति इंतज़ार करते हुए मिले। मंगोलों का मुँह वैसे ही लाल होता है और अब तो वह पूरे गुस्से में थे। उन्होंने कहा—"मैंने दो टोकरी कंडे फूँक डाले, तीन-तीन बार चाय को गर्म किया।" मैंने बहुत नरमी से जवाब दिया—"लेकिन मेरा कसूर नहीं है मित्र! देख नहीं रहे हो, कैसा घोड़ा मुझे मिला है। मैं तो रात तक पहुँचने की उम्मीद रखता था।"

खैर, सुमति को जितनी जल्दी गुस्सा आता था, उतनी ही जल्दी वह ठंडा भी हो जाते थे। लङ्कोर में वह एक अच्छी जगह पर ठहरे थे। यहाँ भी उनके अच्छे यजमान थे। पहले चाय-सत्तू खाया गया, रात को गर्मागर्म थुक्पा मिला।

प्रश्न

I. लेखक के लङ्कोर पहुँचने में देर होने पर सुमति की प्रतिक्रिया क्या थी? (2)

II. लङ्कोर में लेखक कहाँ ठहरा? (2)

III. लेखक द्वारा देरी से लौटने का कारण बताइए। (1)

उत्तर

I. लेखक जब लङ्कोर देर से पहुँचा, तो सुमति बड़े गुस्से में था। उसका मुँह लाल हो रहा था। उसने लेखक की चाय गर्म करने के लिए दो टोकरी कंडे फूँक डाले थे। लेखक के प्रति उसकी प्रतिक्रिया स्वाभाविक थी।

II. लङ्कोर में लेखक एक अच्छी जगह ठहरा। वहाँ वह सुमति के यजमान के घर ठहरा, जहाँ उसने पहले चाय-सत्तू खाया और रात को गर्मागर्म थुक्पा पिया।

III. रास्ता भटक जाने तथा घोड़े के अधिक थक जाने के कारण लेखक को लौटने में देर हुई।

Scanned with CamScanner

7 अब हम तिङ्री के विशाल मैदान में थे, जो पहाड़ों से घिरा टापू-सा मालूम होता था, जिसमें दूर एक छोटी-सी पहाड़ी मैदान के भीतर दिखाई पड़ती है। उसी पहाड़ी का नाम है तिङ्री-समाधि-गिरि। आसपास के गाँव में भी सुमति के कितने ही यजमान थे, कपड़े की पतली-पतली चिरी बत्तियों के गंडे खत्म नहीं हो सकते थे, क्योंकि बोधगया से लाए कपड़े के खत्म हो जाने पर किसी कपड़े से बोधगया का गंडा बना लेते थे। वह अपने यजमानों के पास जाना चाहते थे। मैंने सोचा, यह तो हफ़्ता-भर उधर ही लगा देंगे। मैंने उनसे कहा कि जिस गाँव में ठहरना हो, उसमें भले ही गंडे बाँट दो, मगर आसपास के गाँवों में मत जाओ; इसके लिए मैं तुम्हें ल्हासा पहुँचकर रुपये दे दूँगा। सुमति ने स्वीकार किया।

प्रश्न

I. तिङ्री के मैदान का वर्णन कीजिए। (2)

II. लेखक ने सुमति को अन्य गाँवों में क्यों नहीं जाने दिया? (2)

III. सुमति अपने यजमानों को क्या लाकर देता था? (1)

उत्तर

I. तिङ्री का मैदान पहाड़ों से घिरा एक टापू-सा था, जिसमें दूर एक छोटी-सी पहाड़ी मैदान के भीतर दिखाई पड़ती थी, जिसे तिङ्री-समाधि-गिरि कहते थे।

II. लेखक को पहले ही काफ़ी समय लग चुका था। सुमति अन्य गाँवों में जाता तो और देर होती, इसलिए लेखक ने सुमति को अन्य गाँवों में जाने से मना किया।

III. सुमति अपने यजमानों को बोधगया से लाए गए कपड़े से बनाए हुए गंडे देता था।

8 यहाँ एक अच्छा मंदिर था, जिसमें कंजुर (बुद्धवचन-अनुवाद) की हस्तलिखित एक सौ तीन पोथियाँ रखी हुई थीं, मेरा आसन भी वहीं लगा। वह बड़े मोटे कागज़ पर अच्छे अक्षरों में लिखी हुई थीं, एक-एक पोथी पंद्रह-पंद्रह सेर से कम नहीं रही होगी।

सुमति ने फिर आस-पास अपने यजमानों के पास जाने के बारे में पूछा, मैं अब पुस्तकों के भीतर था, इसलिए मैंने उन्हें जाने के लिए कह दिया। दूसरे दिन वह गए। मैंने समझा था दो-तीन दिन लगेंगे, लेकिन वह उसी दिन दोपहर बाद चले आए। तिङ्री गाँव वहाँ से बहुत दूर नहीं था। हमने अपना-अपना सामान पीठ पर उठाया और भिक्षु नम्से से विदाई लेकर चल पड़े।

प्रश्न

I. लेखक द्वारा सुमति को अपने यजमानों के पास भेज देने का कारण बताइए। (2)

II. 'पुस्तकों के भीतर' होने से क्या तात्पर्य है? (2)

III. 'कंजुर' किसे कहते हैं? (1)

उत्तर

I. लेखक को पढ़ने के लिए 'कंजुर' और ठहरने के लिए 'मंदिर' का उचित वातावरण मिल गया था, इसलिए उसने सुमति को जाने के लिए कह दिया।

II. 'पुस्तकों के भीतर' होने से तात्पर्य है—'पढ़ने में रम जाना।' लेखक किताबों के प्रति स्वाभाविक रुचि के कारण पुस्तकें पढ़ने में तल्लीन हो गया।

III. बुद्धवचन अनुवाद की हस्तलिखित पोथियों को 'कंजुर' कहा गया है।

Scanned with CamScanner